लोक गुरु बुद्ध

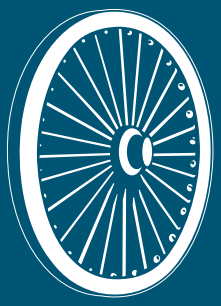

विपश्यनाचार्य श्री सत्यनारायण गोयन्का

लोक गुरु बुद्ध

विपश्यनाचार्य श्री सत्यनारायणजी गोयन्का

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी

लोकगुरु बुद्ध

"गौतम बुद्ध को गृहस्थ जीवन की कठिनाइयों और पेचीदगियों की जानकारी कहां थी? राजकुमार के जीवनकाल में विवाह के पश्चात पुत्र राहुल के जन्म लेते ही उन्होंने गृह त्याग दिया। तदनंतर गृहत्यागी श्रमण का जीवन जीते रहे। उन्होंने स्वयं गृहस्थ का सफल जीवन नहीं जिया। वे औरों को गृहस्थ धर्म कैसे सिखा पाते भला? जीवन के लगभग पचास वर्ष भिक्षु का जीवन बिताने के कारण भिक्षु जीवन की समस्याओं को खूब समझते थे, अतः उनकी शिक्षा भिक्षुओं के लिए तो अत्यंत उपादेय रही, परंतु गृहस्थों को तो वे यही सिखाते रहे कि गृहस्थ जीवन के जंजाल को छोड़ कर भिक्षु बन जाओ। इसी में तुम्हारा कल्याण है। इसी कारण अपने जीवनकाल में उन्होंने बहुत बड़ी संख्या में गृहस्थों को भिक्षु बनाया। अतः गृहस्थ उनकी शिक्षा से भिक्षु भले बन जायं, परंतु आदर्श गृहस्थ कदापि नहीं बन सकते।"

अपने देश में ऐसी गलत धारणा किसी एक व्यक्ति की ही नहीं, बल्कि अनेकों की है। औरों की क्या कहूं, मैं स्वयं इस गलत धारणा का वर्षों शिकार रहा। ३१ वर्ष की उम्र में भगवान बुद्ध की सिखायी हुई कल्याणी विपश्यना के संपर्क में आया। गृहस्थ रहते हुए उससे लाभान्वित हुआ। किसी ने मुझसे भिक्षु बनने के लिए नहीं कहा। मेरे गुरुदेव सयाजी ऊ बा खिन सद्गृहस्थ थे। मेरे दादागुरु सद्गृहस्थ थे और करोड़ों की संख्या में वहां के लोग बुद्ध के अनुयायी हैं और गृहस्थ हैं। पर भिक्षु तो सारे देश की आबादी का १% भाग भी नहीं हैं। ऐसा तो सभी संप्रदायों में देखा जाता है। तब बुद्ध की शिक्षा पर ही यह लांछन क्यों लगाया गया?

विपश्यना से लाभान्वित होकर और उसे सर्वथा निर्दोष पा कर मैंने बुद्धवाणी का अध्ययन शुरू किया तो देखकर आश्चर्य हुआ कि जहां उन्होंने भिक्षुओं को आदर्श गृहत्यागी का जीवन जीने के अनेक उपदेश दिये, वहां गृहस्थों को आदर्श गृहस्थ जीवन जीने के लिए लगभग उतने ही उपदेश दिये। बहुत बड़ी संख्या में उपदेश ऐसे भी थे जो दोनों पर लागू होते थे। दोनों के लिए कल्याणकारी थे।

भगवान बुद्ध को केवल भिक्षुओं का गुरु कहना सच्चाई के सर्वथा विपरीत